शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

समकालीन परिदृश्य में धूम्र कला के सौन्दर्यशास्त्रीय आयाम

बृज सुन्दर शर्मा
चित्रकला विभाग
अकलंक पीजी महाविद्यालय
कोटा, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

धूम्र कला समकालीन कला की एक विशिष्ट प्रयोगधर्मी विधा है, जिसमें धुएँ की क्षणभंगुरता गतिशीलता तथा अमूर्तता को कलात्मक अभिव्यक्ति का आधार बनाया जाता है। इसका सौंदर्य केवल दृश्य आकर्षण में निहित नहीं है बल्कि यह भाव, प्रतीक, दर्शन तथा मानवीय संवेदना का भी प्रभावी माध्यम है। भारतीय एवं पाश्चात्य सौंदर्यशास्त्र के आलोक में धूम्र कला का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि यह कला दर्शक के मन में सौंदर्य अनुभूति आत्मचिंतन तथा रचनात्मक कल्पना का विकास करती है।

बीज शब्द : *सौन्दर्य, रचनात्मकता, कल्पना, अध्ययन, आकार*

प्रस्तावना

धूम्र कला (Smoke Art) का सबसे महत्त्वपूर्ण सौंदर्यशास्त्रीय पक्ष इसकी क्षणभंगुरता है। धुएँ की आकृतियाँ स्थायी नहीं होतीं, वे निरंतर बदलती और विलीन होती रहती हैं। यही परिवर्तनशीलता जीवन की अनित्यता, समय के प्रवाह तथा अस्तित्व की अस्थिरता का प्रतीक बन जाती है। इस प्रकार धूम्र कला दर्शक को यह अनुभव कराती है कि सौंदर्य केवल स्थायी वस्तुओं में ही नहीं, बल्कि परिवर्तन और क्षणिक अनुभवों में भी विद्यमान है। इस कला में विभिन्न पहलू पर अध्ययन करेंगे। धूम्र का अस्तित्व निश्चित समय के लिए है और इसे ही कलाकारों ने चिरस्थाई बना दिया।

धूम्र कला में निर्मित आकृतियाँ अधिकांशतः अमूर्त होती हैं। इनमें निश्चित आकार या सीमाएँ नहीं होतीं, जिसके कारण प्रत्येक दर्शक अपनी कल्पना एवं अनुभव के अनुसार भिन्न-भिन्न अर्थ ग्रहण करता है। यही अमूर्तता इस कला की सबसे बड़ी विशेषता है। यह दर्शक को सक्रिय चिंतन, कल्पनाशक्ति तथा भावात्मक व्याख्या के लिए प्रेरित करती है।

धुएँ की पारदर्शिता तथा उसकी विभिन्न परतें प्रकाश और छाया (Light and Shadow) के अद्भुत प्रभाव उत्पन्न करती हैं। प्रकाश की दिशा बदलने से धुएँ की आकृतियाँ भी बदल जाती हैं, जिससे कलाकृति में निरंतर नवीन दृश्य अनुभव उत्पन्न होता है। यही परिवर्तनशील दृश्य-प्रभाव धूम्र कला को अन्य दृश्य कलाओं से विशिष्ट बनाता है। धुएँ की लहरें, वृत्ताकार प्रवाह घुमावदार रेखाएँ तथा सूक्ष्म बनावट (Texture) धूम्र कला की विशिष्ट संरचनात्मक विशेषताएँ हैं। इन आकृतियों में किसी प्रकार का कृत्रिम नियंत्रण कम तथा प्राकृतिक प्रवाह अधिक होता है। कलाकार इस स्वाभाविक प्रवाह को नियंत्रित कर संतुलित एवं प्रभावशाली दृश्य संरचना का निर्माण करता है। इससे कलाकृति में सहजता, लय तथा गति का अनुभव होता है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अक्टूबर 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

धूम्र कला का एक महत्त्वपूर्ण सौंदर्यशास्त्रीय आयाम इसकी प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है। धुआँ जीवन, मृत्यु, स्मृति, आध्यात्मिकता, संघर्ष, विनाश, पुनर्जन्म, प्रदूषण तथा पर्यावरणीय संकट जैसे अनेक विचारों का प्रतीक बन सकता है। यह बहुस्तरीय प्रतीकात्मकता धूम्र कला को केवल दृश्य माध्यम न बनाकर एक गहन वैचारिक अभिव्यक्ति में परिवर्तित करती है।

धूम्र कला में कलाकार प्रत्यक्ष आकृतियों की अपेक्षा भावों को अधिक महत्त्व देता है। धुएँ की अनिश्चित रेखाएँ करुणा, आशा, रहस्य, शांति, भय, एकाकीपन, स्मृति तथा आध्यात्मिक अनुभूति जैसे विविध भावों को सहज रूप से अभिव्यक्त करती है। भारतीय सौंदर्यशास्त्र के रस-सिद्धांत की दृष्टि से भी धूम्र कला में शान्त, करुण, अद्भुत तथा कभी-कभी भयानक रस की अनुभूति स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

धूम्र कला प्रकृति और पर्यावरण के साथ गहरे रूप से जुड़ी हुई है। धुएँ का उपयोग केवल कलात्मक प्रयोग नहीं, बल्कि पर्यावरणीय चेतना का प्रतीक भी बन सकता है। समकालीन कलाकार धूम्र कला के माध्यम से जलवायु परिवर्तन, औद्योगिक प्रदूषण तथा मानव-प्रकृति संबंधों को सौंदर्यपूर्ण एवं विचारोत्तेजक रूप में प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार यह कला सौंदर्य और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय स्थापित करती है।

धूम्र कला का सौंदर्य केवल बाह्य रूप तक सीमित नहीं है, बल्कि यह दर्शक को आत्मचिंतन, ध्यान तथा आध्यात्मिक अनुभूति की ओर भी प्रेरित करता है। धुएँ का ऊपर उठना भारतीय दार्शनिक परम्परा में आत्मा की उन्नतिए शुद्धि तथा आध्यात्मिक उत्कर्ष का प्रतीक माना गया है। इसलिए धूम्र कला मानव के आंतरिक अनुभवों तथा अस्तित्वगत प्रश्नों को भी अभिव्यक्त करती है।

भारतीय सौंदर्यशास्त्र के अनुसार कला का उद्देश्य 'रस-निष्पत्ति' एवं आनन्द' की अनुभूति कराना है। धूम्र कला अपनी अमूर्तता एवं प्रतीकात्मकता के माध्यम से दर्शक में भावानुभूति उत्पन्न करती है। वहीं पाश्चात्य सौंदर्यशास्त्र में इसे आधुनिक एवं उत्तर-आधुनिक कला की अवधारणाओं जैसे Conceptual Art, Process Art तथा Ephemeral Art से जोड़ा जाता है। इस प्रकार धूम्र कला दोनों परम्पराओं के सौंदर्य.बोध का प्रभावी समन्वय प्रस्तुत करती है।

मानवीय चिंतन की अवधारणा

मानवीय चिंतन (Human Thought / Humanistic Thinking) से आशय उस विचार-प्रक्रिया से है जिसके माध्यम से मनुष्य स्वयं, समाज, प्रकृति तथा समस्त सृष्टि के प्रति संवेदनशील विवेकपूर्ण एवं नैतिक दृष्टिकोण विकसित करता है। यह केवल बौद्धिक क्षमता का परिचायक नहीं है, बल्कि करुणा, सहानुभूति, नैतिकता, सृजनशीलता, स्वतंत्रता, न्याय तथा मानवीय मूल्यों के समन्वित स्वरूप को भी अभिव्यक्त करता है। मानव जीवन के अनुभवए सामाजिक परिस्थितियाँ, सांस्कृतिक परम्पराएँ तथा आध्यात्मिक चेतना मिलकर मानवीय चिंतन का निर्माण करती हैं।

मानवीय चिंतन के आलोक में धूम्र कला का विश्लेषण

धूम्र कला (Smoke Art) समकालीन कला की एक ऐसी प्रयोगधर्मी विधा है, जो केवल दृश्य सौंदर्य तक सीमित नहीं रहती, बल्कि मानव जीवन, प्रकृति, समाज तथा अस्तित्व से जुड़े गहन प्रश्नों को भी अभिव्यक्त करती है। धुएँ की

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अक्टूबर 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

क्षणभंगुरता, गतिशीलता एवं अमूर्त स्वरूप कलाकार को ऐसे विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है, जिन्हें पारंपरिक कला-माध्यमों द्वारा पूर्णतः व्यक्त करना कठिन होता है। मानवीय चिंतन के आलोक में धूम्र कला का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि यह कला मानव के बौद्धिकए भावात्मक, नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास से गहरे रूप से जुड़ी हुई है।

धूम्र कला का सबसे प्रमुख दार्शनिक पक्ष जीवन की अनित्यता का बोध कराना है। धुआँ कुछ क्षणों के लिए आकार ग्रहण करता है और फिर विलीन हो जाता है। यह प्रक्रिया मानव जीवन की अस्थिरता, समय की निरंतरता तथा परिवर्तनशीलता का प्रतीक बन जाती है। भारतीय दर्शन में संसार को परिवर्तनशील माना गया है, जबकि बौद्ध दर्शन में 'अनित्य' (Impermanence) का सिद्धान्त जीवन का मूल सत्य माना गया है।

धूम्र कला इसी दार्शनिक विचार को दृश्य रूप में प्रस्तुत करती है और दर्शक को जीवन के वास्तविक स्वरूप पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है। मानवीय चिंतन का मूल आधार संवेदनशीलता और करुणा है। धूम्र कला की अमूर्त आकृतियाँ दर्शकों के मन में विविध भावनाओं का संचार करती हैं। कभी वे स्मृतियों का आभास देती हैं, कभी पीड़ा, संघर्ष, आशा या शांति का अनुभव कराती हैं। कलाकार धुएँ के माध्यम से मानव की आंतरिक अनुभूतियों को व्यक्त करता है, जिससे दर्शक दूसरों के सुख-दुःख तथा सामाजिक यथार्थ के प्रति अधिक संवेदनशील बनता है। इस प्रकार धूम्र कला मानवीय करुणा एवं सह.अस्तित्व की भावना को सुदृढ़ करती है।

आज विश्व जलवायु परिवर्तन, वायु प्रदूषण तथा पर्यावरणीय असंतुलन जैसी गंभीर समस्याओं का सामना कर रहा है। धुआँ इन समस्याओं का प्रत्यक्ष प्रतीक भी है। अनेक समकालीन कलाकार धूम्र कला के माध्यम से औद्योगिकीकरण, युद्ध, वनों की कटाई तथा प्रदूषण के दुष्प्रभावों को कलात्मक रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह कला दर्शकों को प्रकृति संरक्षण, सतत विकास तथा पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक करती है। इस प्रकार धूम्र कला केवल सौंदर्य का माध्यम नहींए बल्कि पर्यावरणीय चेतना का भी प्रभावशाली साधन है।

धूम्र कला का अमूर्त एवं रहस्यमय स्वरूप दर्शक को आत्मचिंतन की ओर प्रेरित करता है। धुएँ की बदलती आकृतियाँ मनुष्य को अपने अस्तित्व, जीवन के उद्देश्य तथा प्रकृति के साथ अपने संबंधों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं। भारतीय आध्यात्मिक परम्परा में धूप, यज्ञ एवं अग्नि से उत्पन्न धुएँ को शुद्धिए साधना तथा ईश्वर से जुड़ाव का प्रतीक माना गया है। इस दृष्टि से धूम्र कला आध्यात्मिक अनुभूति तथा आंतरिक शांति का भी माध्यम बन जाती है।

समकालीन कला का प्रमुख उद्देश्य समाज की वास्तविकताओं को उजागर करना है। धूम्र कला के माध्यम से कलाकार युद्धए विस्थापन, हिंसा, गरीबी, सामाजिक असमानता तथा मानवाधिकार जैसे विषयों को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत करता है। धुएँ की अनिश्चित आकृतियाँ आधुनिक जीवन की जटिलताओं तथा मानवीय संघर्षों का सशक्त रूपक बन जाती हैं। इस प्रकार धूम्र कला सामाजिक चेतना को जागृत करने और परिवर्तन की प्रेरणा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मानवीय चिंतन का एक महत्त्वपूर्ण आयाम सृजनात्मकता है। धूम्र कला इस सृजनात्मक

स्वतंत्रता का उत्कृष्ट उदाहरण हैए क्योंकि इसमें कलाकार पारंपरिक रंगों और कैनवास की सीमाओं से आगे बढ़कर धुएँ जैसे अस्थायी माध्यम का उपयोग करता है। यह कला दर्शाती है कि रचनात्मकता किसी निश्चित माध्यम की मोहताज नहीं होती। इसी प्रयोगधर्मिता के कारण धूम्र कला समकालीन कला के विकास में नवाचार (Innovation) की प्रतीक बन गई है।

भारतीय दर्शन के 'वसुधैव कुटुम्बकम्' 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' तथा 'अहिंसा' जैसे आदर्श मानव और प्रकृति के बीच संतुलन एवं सहअस्तित्व पर बल देते हैं। धूम्र कला इन मूल्यों को प्रतीकात्मक रूप में अभिव्यक्त करती है। दूसरी ओर पाश्चात्य मानवतावादी विचारक इमैनुएल कांट मानव गरिमा एवं नैतिक विवेक पर बल देते हैं, जबकि जॉन डेवी कला को अनुभव एवं सामाजिक परिवर्तन का माध्यम मानते हैं। धूम्र कला इन दोनों परम्पराओं के विचारों का समन्वय प्रस्तुत करती है, जहाँ कला सौंदर्य के साथ-साथ नैतिक एवं सामाजिक चेतना का भी माध्यम बनती है।

डिजिटल युग में धूम्र कला ने फोटोग्राफी, डिजिटल आर्ट, इंस्टॉलेशन, वीडियो आर्ट तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) जैसे नवीन माध्यमों के साथ मिलकर अपनी अभिव्यक्ति का विस्तार किया है। आज धूम्र कला कला दीर्घाओं तक सीमित न रहकर डिजिटल मंचों, सार्वजनिक प्रदर्शनों तथा वैश्विक कला-विमर्श का महत्त्वपूर्ण भाग बन चुकी है। इसकी विषयवस्तु मानवता, पर्यावरण, शांति तथा वैश्विक उत्तरदायित्व जैसे सार्वभौमिक मूल्यों से जुड़ी होने के कारण यह समकालीन समाज में अत्यंत प्रासंगिक है।

निष्कर्ष

धूम्र कला के सौंदर्यशास्त्रीय आयाम यह स्पष्ट करते हैं कि यह कला केवल धुएँ से निर्मित दृश्य आकृतियों का संग्रह नहीं है, बल्कि सौंदर्य, दर्शन, प्रतीक, भावना तथा मानवीय चिंतन का समन्वित रूप है। इसकी क्षणभंगुरता, अमूर्तता, प्रकाश-छाया, प्रतीकात्मकता तथा पर्यावरणीय चेतना इसे समकालीन कला की अत्यंत प्रभावशाली एवं विचारोत्तेजक विधा बनाती है। धूम्र कला दर्शक को सौंदर्य का अनुभव कराने के साथ-साथ जीवन, प्रकृति तथा मानव अस्तित्व के गहन आयामों पर विचार करने के लिए भी प्रेरित करती है। अतः स्पष्ट है कि मानवीय चिंतन केवल विचारों की प्रक्रिया नहीं, बल्कि मानव जीवन के नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का समग्र स्वरूप है। यह मनुष्य को संवेदनशील, विवेकशील तथा उत्तरदायी नागरिक बनने की प्रेरणा देता है। समकालीन कला, विशेषकर धूम्र कला, इसी मानवीय चिंतन को नई कलात्मक भाषा प्रदान करती है। धूम्र कला अपने प्रतीकों, क्षणभंगुरता, अमूर्तता तथा पर्यावरणीय संदेशों के माध्यम से मानव को स्वयं, समाज और प्रकृति के साथ गहरे संबंध स्थापित करने की प्रेरणा देती है। इस प्रकार मानवीय चिंतन धूम्र कला के दार्शनिक एवं सौंदर्यशास्त्रीय आधार को समझने की प्रमुख कुंजी है।

मानवीय चिंतन के आलोक में धूम्र कला का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि यह केवल धुएँ से निर्मित दृश्य प्रभाव नहीं, बल्कि मानव जीवन, प्रकृति, समाज और अस्तित्व के गहन प्रश्नों की कलात्मक अभिव्यक्ति है। इसकी क्षणभंगुरता जीवन की अनित्यता का बोध कराती है, इसकी अमूर्तता कल्पना शक्ति को विकसित करती है, इसकी प्रतीकात्मकता सामाजिक एवं पर्यावरणीय चेतना को जागृत करती है तथा इसकी सृजनात्मकता कला को नवीन आयाम प्रदान

करती है। इसलिए धूम्र कला समकालीन कला की एक महत्त्वपूर्ण विधा है, जो मानवीय मूल्यों, संवेदनशीलता, सह-अस्तित्व तथा रचनात्मक स्वतंत्रता को सुदृढ़ करते हुए कला को समाजोपयोगी एवं चिंतनपरक बनाती है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 John Dewey, Art as Experience (1934)

2 Immanuel Kant, Critique of Judgment (1790)

3 Herbert Read, The Meaning of Art (1931)

4 E. H. Gombrich, The Story of Art (1950)

5 Ananda K. Coomaraswamy, The Transformation of Nature in Art (1914)

6 Bharata Muni, Nāṭyaśāstra

7 Abhinavagupta, Abhinavabhāratī

8 Steven Spazuk, अध्ययन हेतु Fumage (Smoke Painting) पर उपलब्ध प्रदर्शनी कैटलॉग एवं कलाकार वक्तव्य